E-ISSN-2584-2870 DOI: https://doi.org/10.65833/dbs.2026.022

देवभूमि-सौरभम्
Devabhūmisaurabham

Vol 2 Issue 2 July-Dec 2025 Devabhūmisaurabham International Journal of CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag Uttarakhand India

वैदिक ऋषियों की तपोभूमि गढ़वाल

डॉ. सुशील प्रसाद
(सहायक आचार्य)
सेंट्रल संस्कृत यूनिवर्सिटी,
श्री रघुनाथ कीर्ति कैंपस
देवप्रयाग

शोधसार- गढ़वाल क्षेत्र वैदिक ऋषियों की तपस्थली रहा है वैदिक ऋषियों ने नदियों के संगमों ,गिरी गह्वरो में अपने लिए तपस्या स्थल बनाए , इस क्षेत्र में ऋषि अंगिरा , दक्ष , महर्षिजमदग्नि, परशुराम ,वैदिक ऋषि नर- नारायण , ऋषि नारद , रुद्र, महर्षि अगस्त्य , महर्षि भरद्वाज ,आचार्य सुश्रुत ,महर्षि वेदव्यास आदि अनेकानेक ऋषियों ने इस पावन क्षेत्र को अपने दिव्यज्ञान से अभिषिंचित किया । प्रकृति की गोद में ध्यान, योग इत्यादि करते हुए अपनेआराध्य का चिंतन मनन तथा अपनी परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए अपनी शिष्य परंपरा के शिक्षण-प्रशिक्षण द्वारा अपने विचारों को चिर स्थाई बनाया ।

आज भी अनेकानेक स्थलों पर प्राचीन आश्रमों के अवशेष प्राप्त होते हैं तथा कुछ आश्रमों को हम परिवर्तित रूप में भी देख सकते हैं ये आश्रम भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा के मूल स्रोत हैं इन आश्रमों में शैव, शाक्त, वैष्णव,जैन, बौद्ध आदि भारतीय ज्ञान परंपराओं का सूत्रपात हुआ,इन सभी परंपराओं का मूल उद्देश्य सत्य की खोज एवं जीव मात्र के कल्याण की कामना रहा है। मनुष्य में मानवोचित गुणों का विकास हो वे भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति को भी प्राप्त करें यही इन तपस्थलियों अथवा आश्रमों का मुख्य उद्देश्य रहा है ।

कूट-शब्द: गढ़वाल, भारतीय सनातनपरंपरा, आश्रम-पद्धति, वैदिक ऋषि प्रणाली, तपस्थलि

विषय विस्तार - वैदिक ऋषियों का देव भूमि गढ़वाल से बहुत ही आत्मीय संबंध रहा है । ऋग्वेद के प्रसिद्ध ऋषि अंगिरा ब्रह्मा के मानस पुत्रों में एक थे वे अथर्व अंगिरा के नाम से भी जाने जाते हैं उनके पुत्र बृहस्पति देवताओं के पुरोहित थे इनका आश्रम अलकनंदा के तट पर था । [1] ऋषि अंगिरा ने सरस्वती नदी के इसी तटवर्ती शीतप्रधान प्रदेश में सर्वप्रथम अग्नि को प्रज्वलित कर उत्पन्न किया था । [2] राजा दक्ष जो मरीचि ऋषि के पुत्र थे तथा जिनकी राजधानी कनखल हरिद्वार में थी वे अदिति कद्रू और विनीता आदि 13 कन्याओं के पति थे, ये हरिद्वार में रहते थे। इसीलिए अलकनंदा क्षेत्र को देव -दानव और नागों की जन्म भूमि कहकर इसका स्तवन किया गया है ।[3] महर्षि भृगु के पुत्र ऋषि जमदग्नि ने गोवंश की रक्षा के लिए 16 मंत्र जो ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं उनकी रचना की है ।[4] गढ़वाल मंडल में जनपद उत्तरकाशी के निकट नाकुरी नामक स्थान में जमदग्नि अपनी पत्नी रेणुका के साथ तपस्या करते थे ,केदार खंड पुराण में यह स्थान अत्यंत पवित्र कहा गया है इसके दर्शन मात्र से पापों का नाश होता है ।[5] इसी पावन प्रदेश में जमदग्नि के पुत्र परशुराम भी तपस्या रत रहे - यमदग्नि सुतो यत्र तपस्येते सुदुस्करम् ।[6] ऋषि वशिष्ठ ब्रह्मा के मानस पुत्र एवं सप्तर्षियों में एक कहे गए हैं ,वह अपनी पत्नी अरुंधति सहित गढ़वाल के टिहरी जनपद की हिमदाव पट्टी में स्थित विशोन अर्थात् वशिष्ठ आश्रम में निवास करते थे। विशोन पर्वत में वशिष्ट गुफा और वशिष्ट कुंड नाम से उनका स्थान आज भी विद्यमान है । ऋषिकेश और देवप्रयाग में भी वशिष्ठ आश्रम विद्यमान है ।(केदार खंड पुराण 47/ 17/ 18) महाभारत आदिपर्व (99/67)के अनुसार पर्वतराज मेरु के पार्श्व क्षेत्र में वशिष्ठ ऋषि का आश्रम था । कवि कुलगुरू कालिदास ने भी (रघुवंश में) हिमालय में गंगा तट पर एक गुफा में महर्षि वशिष्ठ के रहने का उल्लेख किया है जिसमें राजा दिलीप अपनी पत्नी सहित पुत्र प्राप्ति की आशा से ऋषि के पास पहुंचे थे ।

ऋषि नर- नारायण बद्रीनाथ क्षेत्र में निवासरत रहे जिनकी स्मृति में आज भी दो पर्वत नर-नारायण पर्वत के नाम से विख्यात हैं । ऋग्वेद के छटे मंडल के ऋषि नर- नारायण है ,इनकी माता का नाम मूर्ति देवी था । बद्रिकाश्रम में इनका स्थान बताया गया है ।[7]

हरिं कृष्णं नरं चैव तथा नारायणं नृप: ।

योगाभ्यासरतो नित्यं हरिकृष्णो बभूवह ।।[8]

महाभारत जिसका नाम जय संहिता है इसकी रचना व्यास जी द्वारा इसी क्षेत्र में की गई, इस ग्रंथ के प्रारम्भ में महर्षि ने ऋषि नर-नारायण और देवनदी सरस्वती का सर्वप्रथम स्तवन किया-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं ।

देवीं सरस्वतीं वंदे ततो जय मुदीरयेत् ।।

महाभारत वन पर्व में लिखा है कि गंधमादन पर्वत क्षेत्र में नर-नारायण का आश्रम है, यह आश्रम वैष्णव शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा है ।बृहस्पति के पुत्र भारद्वाज अनेक शास्त्रों की ज्ञाता थे महाभारत आदिपर्व के अनुसार हरिद्वार क्षेत्र में इनका आश्रम था ,ये आयुर्वेद के भी आचार्य कहे गए हैं धनवंतरी इन्हीं के शिष्य थे । ऋग्वेद के तृतीय मंडल के ऋषि विश्वामित्र का आश्रम भी इसी क्षेत्र में था, जिसमें विश्वामित्र को वेद मंत्र का साक्षात्कार प्राप्त हुआ , इसके पश्चात् उनके शिष्य वामदेव द्वारा अन्य ऋषियों को वेद मत्रों का ज्ञान प्राप्त हुआ । आयुर्वेदाचार्य सुश्रुत उनके पुत्र कहे जाते हैं । केदार खंड (194 /33) के अनुसार केदार और मंदाकिनी के समीप में ' सूर्यप्रयाग ' से कुछ दूरी पर इनका आश्रम था । रुद्रप्रयाग से 16 किलोमीटर दूर मंदाकिनी तट पर अगस्त्यमुनि नामक स्थान में महर्षि अगस्त्य के आश्रम की स्मृति आज भी सुरक्षित है ,स्थानग्राम(रवाईं) और देवग्राम (पट्टी -बमडा)में आज भी अगस्त के मंदिर विद्यमान हैं महाभारत से भी इस आश्रम की पुष्टि होती है, केदारखंड पुराण में इसका वर्णन इस प्रकार प्राप्त होता है-

मन्दाकिन्यास्तटे रम्ये नानामुनि जनाश्रमे ।

अगस्त्यादिन्महाभागन्नात्वा विप्रोनलाश्रमे ।।[9]

महर्षि अगस्त्य ने बदरिकाश्रम में भी तप किया था । अलकापुरी के पास इनके निवासरत रहने के प्रमाण प्राप्त होते हैं , महाभारत के अनुसार इन्होंने अपनी पत्नी लोपामुद्रा सहित हरिद्वार में भी तप किया था । ऋषि भृगु ब्रह्मा के मानस पुत्र और ऋग्वेद कालीन ऋषि हैं इनकी दो पत्नियों में एक हिरण्यकश्यप की पुत्री दिव्या भी थीं इनका पुत्र उशना कवि जिसको ब्रह्मांडपुराण में असुरों का गुरु आचार्य शुक्र भी कहा गया है। [10] इन्हें ऋग्वेद के मंत्रदृष्टा ऋषियों में गिना जाता है इनका निवास क्षेत्र उत्तर गढ़वाल के भृगुपन्थ नामक स्थान में बताया गया है इन्होंने हिमालय के उत्तर भाग में स्थित उत्कृष्ट लोक की विलक्षणता का प्रतिपादन किया है ।[11] ब्रह्मा जी द्वारा महर्षि भृगु को सरस्वती देवी का मंत्र बदरिकाश्रम में प्रदान किया गया था - भृगवे ददानुष्टो ब्रह्मा बद्रिकाश्रमे ।[12] चरक संहिता के अनुसार रोगों के उन्मूलन के लिए तथा रोगों के उपचार ज्ञान के विषय में जिज्ञासुओं का बृहद् सम्मेलन स्वर्गपति इंद्र के द्वारा आयोजित हुआ , महर्षि भरद्वाज के नेतृत्व में 52 आचार्य इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए ।[13] ऋग्वेद के अनुसार ऋषि पुरूरवा और उर्वशी का क्षेत्र मंदाकिनी और अलकनंदा का ही तटीय प्रदेश है इसी सूक्त के 42 वें मंत्र में लिखा है कि जहां मंदाकिनी आदि पवित्र नदियां बहती हैं वह ही स्वर्ग भूमि है । ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि स्वर्ग भूमि में ही अग्नि ने पुरूरबा और उर्वशी को अनुग्रहीत किया था तथा यह शीत प्रधान प्रदेश था । चंद्रवंशी सम्राट पुरूरवा मनु पुत्री इला के गर्भ से उत्पन्न महर्षि बुध के पुत्र थे, जिनका आश्रम बुधान(बुध -अयन)में था । बुध चंद्र वंश के मूल प्रवर्तक चंद्र के पुत्र और महर्षि अत्रि के पौत्र थे , पुरूरवा की राजधानी जोशीमठ प्राग्ज्योतिषपुर थी ।पुरुरवा और उर्वशी का क्रीड़ा क्षेत्र या स्वर्ग भूमि मंदाकिनी और अलकनंदा का तटवर्ती पवन प्रदेश है केदारखंड में इसका उल्लेख मिलता है -

पश्चमे क्रोशखंडार्ध्दे बद्रीनाथ धामत: ।

उर्वशी कुण्डमाख्यातं सर्व सौन्दर्य दायकम् ।।

पुरा पुरूरवा यत्र रेमे वत्सरपंचमे ।

उर्वश्या सह वामाक्षि जनयामास वै सुतान् ।।[14]

महाभारत के अनुसार मेनका द्वारा त्यागी गई भरत- जननी शकुंतला महर्षिकण्व को हिमालय पर्वत की ई-पत्रिका में मालिनी नदी के तट पर प्राप्त हुई थी -

प्रस्थे हिमवते रम्ये मालिनी मभितोनदीम् ।[15]

महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम् में मालिनी नदी के तट पर पर्वत और समभूमि के संधि स्थल पर कण्वआश्रम की पुष्टि की है ,उनके अनुसार दुष्यंत समभूमि में नहीं वरन् पर्वत प्रदेश में आखेट कर रहे थे । इसीलिए उनके सेनापति ने 'गिरि चर इव नाग 'कहकर संबोधित किया है ।

आखेट स्थल गिरि और समतल भूमि भाग के निकट था ,जहां हिरनों के साथ भालू आदि बन्यपशु मालिनी के जल को पीने आते थे। कण्वऋषि का आश्रम पर्वत और समभूमि के संधि स्थल पर मालिनी नदी के तट पर था । पर्वत प्रदेश के अत्यंत पास होने के कारण इस स्थल की भूमि भी ऊंची-नीची थी, जिसके कारण सारथी ने घोड़े की लगाम को खींचकर रथ का वेग नियंत्रित कर दिया था ।केदार खंड के अनुसार कण्वआश्रम से लेकर नंदागिरी पर्यन्त केदार क्षेत्र की सीमा बताई गई है अतः कण्वआश्रम गढ़वाल की दक्षिणी सीमा पर मालिनी नदी के तट पर स्थित था । कुलपति कण्व के शिष्य-प्रशिष्य भी ऋग्वेद के अनेक मत्रों के ऋषि हैं कण्व परम्परा के लगभग 27 शिष्यों-प्रशिष्यों द्वारा भी वेदमत्रों का विस्तार हुआ है ,ऋग्वेद प्रथम मंडल के तीसरे सूक्त में 36 से 43 तक के ऋषि घोरपुत्र कण्व हैं तथा प्रथम मंडल में 12 से 23 तक के ऋषि कण्व के पुत्र मेधातिथि तथा प्रथम मंडल में 44 से 50 तक के ऋषि कण्व के द्वितीय पुत्र प्रस्कण्व हैं ।

वैदिक साहित्य में राजा दक्ष के नाम का उल्लेख प्राप्त होता है, दक्ष की कन्याओं से देव,दानव, नाग, और आदित्यों का प्रादुर्भाव बताया गया है इससे पूर्व मानसी सृष्टि थी जिसकी उत्पत्ति श्रवण एवं दर्शन से हुई ।[16] दक्ष प्रथम आर्य नरेश थे ,उनकी राजधानी हरिद्वार के समीप कनखल में थी । गंगा तट पर दक्ष प्रजापति का प्राचीन मंदिर आज भी विद्यमान है इस प्रकार वेद एवं पौराणिक साहित्य तथा वर्तमान में भूगर्भ शास्त्रियों के अनुसार भी इस क्षेत्र में सर्वप्रथम जीवधारियों की उत्पत्ति बताई गई है राजा दक्ष की अनेक कन्याओं से अनेक जीव- जंतु, मनुष्य आदि की उत्पत्ति हुई ।[17]

वैदिक देव विष्णु ,रुद्र आदि का भी गढ़वाल क्षेत्र से संबंध दृष्टिगोचर होता है। ऋग्वेद में इंद्र, विष्णु एवं सरस्वती का स्थान इसी क्षेत्र में परिलक्षित होता है ।[18] ऋग्वेद में महर्षि जह्नु का नाम आया है [19] जह्नु ऋषि का आश्रम जनपद उत्तरकाशी में हरसिल से आगे जाह्नवी अर्थात् जाड़गंगा के तट पर अवस्थित था । राजा भागीरथ द्वारा लाई गई देवनदी भागीरथी को जह्नु ऋषि ने इसी क्षेत्र में उदरस्त कर दिया था । [20]

भागीरथ द्वारा जह्नुऋषि को प्रसन्न करने के उपरांत उनके द्वारा गंगा को मुक्त कर दिया गया ,तब से गंगा जी का नाम जाह्नवी भी हो गया । [21]

ऋग्वेद में उल्लेख है कि जहां मंदाकिनी आदि नदियां बहती हैं वहां पर मनु का आश्रम विद्यमान है मनु पुत्री इला जो मनु पुत्र शुद्युम्न के नाम से अलकनंदा के उत्तरी क्षेत्र में रहती थी ,उनका चंद्रमा के पुत्र बुद्ध से चंद्र वंश के प्रवर्तक राजा पुरूरवा का जन्म हुआ ।[22] भगवान वेदव्यास महर्षि पराशर के पुत्र थे। पुराणों के अनुसार कृष्ण द्वैपायन से पूर्व 28 व्यास हो चुके थे ।परन्तु कृष्ण द्वैपायन ने ही वैदिक संहिता का विभाजन किया । जिनका वर्ण कृष्ण था जो द्वीप में रहते थे, वही भारतीय वांगमय में कृष्ण द्वैपायन के नाम से प्रसिद्ध हुए । [23] गढ़वाल में चार स्थान व्यास आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हैं दो बदरिकाश्रम के निकट बद्रीनाथ पुरी से आगे माणा गांव के पास सरस्वती नदी के तट पर अवस्थित हैं जो क्रमशः व्यास आश्रम और व्यास गुफा के नाम से जाने जाते हैं ।[24] केदार खंड में वर्णन है कि गंधमादन पर्वत पर बदरिकाश्रम है,महर्षि वेदव्यास अपने सैकड़ो शिष्यों के साथ वहां निवासरत रहे ,वहीं पर इन्होंने महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि का प्रणयन किया । केदार खंड के अनुसार मैंखंड (महिष खंड)परगना नागपुर में एक विस्तृत गुफा में भी महामुनीश्वर व्यास का निवास स्थान है ।[25] जाड़े के दिनों में वहीं पर वे निवास के लिए जाते थे । व्यासघाट देवप्रयाग से आगे 15 किलोमीटर दूरी पर हरिद्वार की ओर अलकनंदा और नयार के संगम स्थल पर एक मनोरम उष्ण उपत्यका में अवस्थित है । पुराणों में इसे इंद्रप्रयाग भी कहा गया है यहां पर व्यास आश्रम की प्राचीन यज्ञ वेदियां आज भी दिखाई देती हैं । इस प्रकार व्यास आश्रम और व्यास गुफा तथा मैंखंड की व्यास गुफा वेद व्यास जी का ग्रीष्मकालीन निवास स्थान था ।

उपसंहार - इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि यह संपूर्ण गढ़वाल भूमि वैदिक ऋषियों की तपोभूमि एवं कर्म भूमि रही है यहां स्थान- स्थान पर ऋषि -आश्रम विद्यमान थे । प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण एवं गंगा आदि अनेक पवित्र नदियों के प्राकृतिक संगीत में कल-कल निनाद से

परिपूर्ण यह संपूर्ण क्षेत्र वैदिक ऋषियों का प्रिय स्थान रहा है । विष्णु पुराण में इस भू-क्षेत्र का इस प्रकार स्तवन हुआ है -

यद्बदर्याश्रमं पुण्यं गन्धमादन पर्वते ।

नरनारायणस्थाने तत्पवित्रं महीतले ।।

संदर्भ सूची -

01- महाभारत वन पर्व 142/ 06

02-ऋग्वेद 01/31/ 01

03-केदार खंड पुराण 38/35

04-ऋग्वेद 08/09

05-केदार खंड पुराण 90/15

06-केदार खंड पुराण 93/15

07-केदार खंड पुराण 57/20

08-श्रीमद् देवी भागवत 04/05

09-केदार खंड 47/20

10-ब्रह्मांड पुराण 03 /01/76

11-महाभारत शांति पर्व 192

12-ब्रह्म वैवर्त पुराण

13-चरक संहिता (सूत्र स्थान)01/11/ 14

14-केदार खंड पुराण 58 /136-137

15-महाभारत 72/10

16-केदार खंड पुराण76/40- 41

17-महाभारत शांति पर्व166/17

18-ऋग्वेद 1216

19-ऋग्वेद 01/116 /19

20-केदार खण्ड पुराण 37/10

21-ऋग्वेद 03/58/06

22-केदार खण्ड12 /79

23-महाभारत आदि पर्व 63 /84

24-श्रीमद् भागवत् 07/02/03

25-केदार खंड 201/11

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1-महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर -273005 संवत्-2070 चौदवां पुनर्मुद्रण ।

2-ऋग्वेद -चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान 380यू.ए. जवाहरनगर दिल्ली 110007संसकरण-2016

3-केदारखंडपुराण- हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग वि.सं0-2066

4-श्रीमद्देवीभागवत्-गीता प्रेस गोरखपुर गोविंद भवन कार्यालय कोलकाता संस्थान सं0-2079 तेईसवां पुनर्मुद्रण ।

5-ब्रह्मवैवर्तपुराण प्रथम संस्करण -चौखंबा कृष्णदास अकादमी के0-37/118 गोपाल मंदिर लेन , संस्करण - 2018

6-चरक संहिता -चौखम्वा संस्कृत संस्थान वाराणसी 1941- प्रथम संस्करण।

7-श्रीमद् भागवत् महापुराण-गीता प्रेस गोरखपुर गोविंद भवन कार्यालय कोलकाता संस्थान सं0-2079 तेईसवां पुनर्मुद्रण ।